बुन्देलखण्ड का इतिहास

(1531 से 1857 ई. तक)

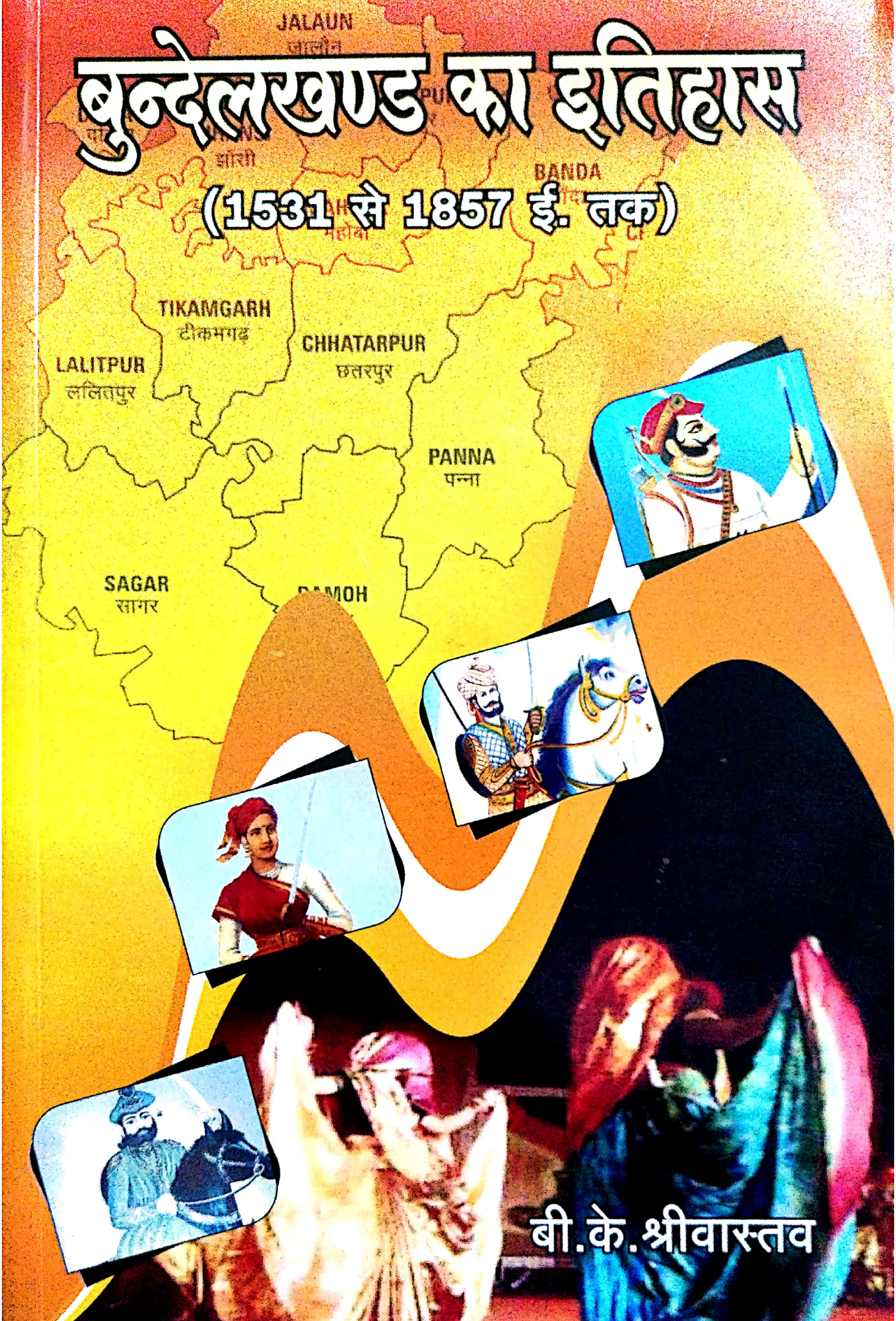

बी.के.श्रीवास्तव

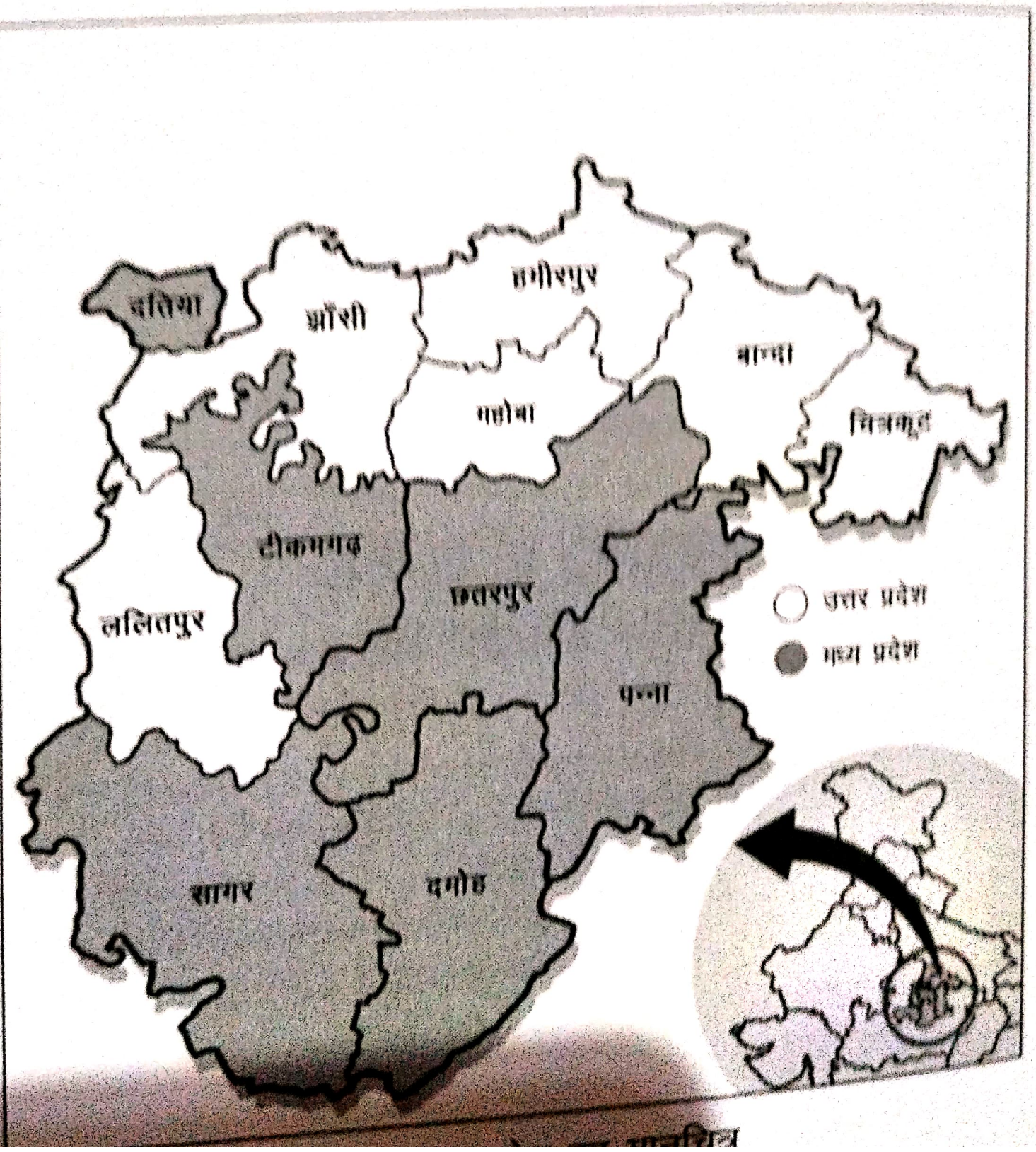

दतिया
झाँसी
हमीरपुर
बान्दा
महोबा
चित्रकूट
टीकमगढ़
ललितपुर
छतरपुर
पन्ना
सागर
दमोह
उत्तर प्रदेश
मध्य प्रदेश

बुन्देलखण्ड का इतिहास

– 1531 से 1857 ईस्वी तक –

ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

DK
PRINTWORLD
Publishers of Indian Traditions

Cataloging in Publication Data — DK
[Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>]

Śrīvāstava, Brajeśa Kumāra, 1968- author.
Bundelakhaṇḍa kā itihāsa : 1531 se 1857 īsvī taka /
Brajeśa Kumāra Śrīvāstava.
pages cm
In Hindi.
On the history of Bundelkhand, India; from origin to 1857.
Includes bibliographical references.

1. Bundelkhand (India) – History. 2. Bundelkhand (India) – Kings and rulers. 3. India – History – Sepoy Rebellion, 1857-1858. I. Title.

LCC DS485.B7S65 2018 | DDC 954.2 23

ISBN: 978-81-246-0948-4 (अजिल्द)
978-81-246-0949-1 (सजिल्द)

प्रथम प्रकाशन वर्ष, 2019

© लेखक

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश या पूरे का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण (किसी भी रूप में या किसी भी विधि जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यान्त्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य तरीके से) कॉपीराइट धारक एवं प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

मुद्रक एवं प्रकाशक :
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लि.
पंजीकृत कार्यालय : "वेदश्री", एफ-395, सुदर्शन पार्क
मेट्रो स्टेशन : ई.एस.आइ हॉस्पिटल, नई दिल्ली - 110015
दूरभाष : (011) 25453975, 25466019
ई-मेल : indology@dkprintworld.com
वेब : www.dkprintworld.com

विषय-सूची

	भूमिका	V
1.	बुन्देलखण्ड : नामकरण एवं भौगोलिक सीमाएं	1
2.	बुन्देलों का उत्कर्ष	13
3.	चम्पतराय का मुग़लों से संघर्ष	20
4.	चम्पतराय एवं मुग़ल उत्तराधिकार का संघर्ष (1657-58 ई॰)	24
5.	छत्रसाल : प्रारम्भिक जीवन एवं शिवाजी का प्रभाव	32
6.	छत्रसाल द्वारा बुन्देला साम्राज्य की स्थापना	42
7.	छत्रसाल एवं मोहम्मद खाँ बंगश का संघर्ष	49
8.	छत्रसाल के पेशवा बाजीराव प्रथम से सम्बन्ध	54
9.	सागर-नर्मदा क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना	59
10.	1842 के बुन्देला विद्रोह के कारण	63
11.	बुन्देला विद्रोह : आरम्भ एवं प्रसार	69
12.	राजा पारीछत : बुन्देला विद्रोह (1842) का प्रमुख सूत्रधार	79
13.	बुढ़वामंगल मेला	88
14.	1842 के बुन्देला विद्रोह का नायक : मधुकरशाह	94

15. बुन्देला विद्रोह (1842 ई॰) में हिरदेशाह की भूमिका 105
16. बुन्देला विद्रोह का दमन 111
17. झाँसी में 1857 की क्रान्ति का आरम्भ एवं झोकन बाग हत्याकाण्ड 117
18. 1857 की क्रान्ति : अंग्रेज़ दल का ललितपुर से दहशत भरा सागर पलायन 126
19. सागर में 1857 की क्रान्ति की पूर्व सन्ध्या पर अंग्रेज़ अधिकारियों की बढ़ती चिन्ताएं एवं उठाए गए सुरक्षात्मक कदम 134
20. सागर में 1857 ई॰ की क्रान्ति का आरम्भ एवं शाहगढ़ राजा बखतवली की दोहरी भूमिका 144
21. 1857 ई॰ की क्रान्ति में राजा बखतवली की दूरदर्शिता, दोस्ती एवं व्यूह-रचना 153
22. सागर का तात्या टोपे : बोधन दौआ 162
23. बानपुर राजा मर्दनसिंह का 1857 की क्रान्ति के दौरान सागर क्षेत्र में स्थित अंग्रेज़ों पर आतंक 166
24. बुन्देलखण्ड में 1857 की क्रान्ति का दमन एवं प्रभाव 174
25. सन् 1857 की क्रान्ति में साम्प्रदायिक एकता 180
26. 1857 की क्रान्ति के दौरान लोकगीतों द्वारा बुन्देलखण्ड में राष्ट्रीय चेतना का विकास 191

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची 203

बुन्देल केसरी महाराज छत्रसाल

प्रस्तुत पुस्तक *बुन्देलखण्ड का इतिहास* में बुन्देलखण्ड के सीमांकन, नामकरण एवं बुन्देला साम्राज्यों की स्थापना को रोचक ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। अखिल भारतीय स्तर पर 1836 ई॰ में भारतीय स्वाधीनता का प्रथम प्रस्ताव चरखारी में पारित हुआ था। इसके बाद 1842 ई॰ के बुन्देला विद्रोह में जैतपुर नरेश पारीछत ने अपने सहयोगियों मधुकरशाह एवं हिरदेशाह के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे कर दिए। इसी प्रकार 1857 ई॰ की क्रान्ति में बानपुर राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ राजा बखतवली एवं रानी लक्ष्मीबाई ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर अंग्रेज़ों को अत्यधिक परेशान किया। बुन्देलखण्ड के अंग्रेज़ों ने सागर आकर जान बचाई। सागर के किले में पूरे 370 अंग्रेज़ों ने शरण ली। इस किले को चारों ओर से क्रान्तिकारियों ने घेर लिया। बड़ी मुश्किल से ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज ने बुन्देलखण्ड में 1857 ई॰ की क्रान्ति का दमन किया।

उक्त समस्त घटनाक्रम को प्रथम बार इस पुस्तक में सहज सरल एवं सुबोध ढंग से समझाने का प्रयास किया है। आशा है यह पुस्तक छात्रों, शोधार्थियों सहित इतिहास में रुचि रखने वाले आम नागरिकों को भी रूचिकर लगेगी। बुन्देलखण्ड का इतिहास प्रथम बार धाराप्रवाह ढंग से एवं रोचक शैली में इस पुस्तक में प्रस्तुत करने का हरसम्भव प्रयास किया गया है।

बी॰के॰ श्रीवास्तव का जन्म 2 मई 1968 को हुआ था। उनकी इतिहास विषय पर पैंतीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। विभिन्न शोध पत्रिकाओं एवं सम्पादित पुस्तकों में उनके 85 से अधिक शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। अस्सी से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उन्होंने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं। भारत की विभिन्न शोध पत्रिकाओं में वे सम्पादक, सह-सम्पादक, सदस्य सम्पादक मण्डल एवं सदस्य सलाहकार मण्डल के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। वे वर्तमान में मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् के अध्यक्ष हैं, इसके अलावा भी राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न अकादमिक संस्थाओं में वे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष एवं आजीवन सदस्य के रूप में जुड़े हुए हैं। नौ शोध छात्र उनके मार्गदर्शन में पीएच॰डी॰ उपाधि प्राप्त कर चुके हैं एवं आठ शोध छात्र शोधरत हैं।

DKPW

₹ 280

978-81-246-0948-4